http://www.rtuonline.com

हिन्दी साहित्य

(प्रथम प्रश्न–पत्र–रीतिकालीन काव्य)

Time Allowed : Three Hours **Maximum marks : 100**

प्रश्नों का उत्तर 500 शब्दों की सीमा में होना चाहिए।

1. निम्नलिखित अवतरणों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए:

(क) विधि के समान है, विमानीकृत राजहंसए 8
विविधविबुध युत मंरू सो अचल है।
दोपति दिपति अति सातौं दीप दीपियतु,
दूसरो दिलीप ससो सुदक्षिणा को बल है।
सागर उजागर की बहु बाहिनी को पति,

धनदाय–प्रिय किधौं सूरज अमल है।
सब विधि सबरथ राजै राजा दशरथ,
भागीरथ पथगामी गंगा कैसो जल है।

अथवा

तंत्री–नांद, कवित्त–रस, सरस राग, रति रंग।
अनबूड़े, बूड़े, तरे जै बूड़े सब अंग।।
मंगल बिन्दू, सुरंग युख ससि केसरि आड़ गुरू।
इक नारी लाहि संगु, रसमय किए लोचन जगत।।
अजौ तरयौना ही रह्यौ, श्रुति सेवत इक रंग।
नाक–बास बेसरि लह्यौ, बसि मुकुतनु कै संग।।

http://www.rtuonline.com

ma9300930012@gmail.com

Whatsapp @ 9300930012
Your old paper & get 10/-
पुराने पेपर्स भेजे और 10 रुपये पायें,
Paytm or Google Pay से

http://www.rtuonline.com

PTO

http://www.rtuonline.com

http://www.rtuonline.com

(ख) हीन भए जल मीन अधीन कहा कछु मतो अकुलानि समानै, 8
नीर सनेही को लाभ कलंक निरास है कायर त्यागत प्रानै।
प्रीति की रीति सु क्यौं समझे जड़, मत के पाानि परैं को प्रमानै,
या मन की जु दशा घनआनन्द जीव की जीवनि जान ही जानै।।

अथवा

मौज दरियाव राव सत्रुसाल तने जाको
जगत मैं सुजस सहज सतिभान है
विबुध समाज सदा सेवत रहत जाहि
जाचकानि देत जो मनोथ को दान है।।
जाके गबुन–सुमन–सुवास में मुदित को दान है।।
साँच 'मतिराम' कवि करत बखान है।
जाकी छाँह, बसत बिराजै ब्रजराज यह
भावसिहं सोई कलपद्रुय दिवान है।।

(ग) कामिनी कंत सों जामिनी चंद सों, 8
दामिनी पावस–मेघ–रूघटा सो।
कीरतिं दान सों सूरति ज्ञान सों,
प्रीति बढ़ी सनगान महा सों,
'भूषन' भूषन सों तन ही,
नालिनी नव पूषनदेव–प्रभा सों।
जाहिर चारिहूँ और जहान,
लसै हिन्दुआन खुमान सिवा सों।।

अथवा

घटति बढ़ति संपति समुति, गति अरहट की जोय।
रीति घटिका भरति है, भरी सु रीति होय।।
सुदृढ़ सूर नाहिन चलै, कायर लगति रन घात।
देवल डिगै न पवन तैं, जैसे ध्वज फहरात।।
होय सुद्ध मिटि कलुषता, सत–संगति कौ पाय।
जैसे पारस को परसि लौ कनक द्वै जाय।।

2. 'केशव के काव्य में भाव पक्ष की अपेक्षा कला पक्ष अधिक प्रमुख है। स्पष्ट कीजिए। 16

अथवा

'बिहारी के काव्य में श्रृंगार, भक्ति और नीति की त्रिवेणी लहरा रही है। इस कथन की समीक्षा कीजिए।

3. 'घनानंद प्रेम की पीर के कवि कहे जाते हैं। इस कथन की सोदाहरण पुष्टि कीजिए। 16

अथवा

'सेनापति का श्लेष सौन्दर्य काव्यत्व की पुष्टि से किस सीमा तक प्रभावित करता है।

http://www.rtuonline.com
http://www.rtuonline.com

http://www.rtuonline.com

4. 'रीतिकालीन कवियों में अकेले भूषण वीर रस के श्रेष्ठ कवि हैं' इस कथन की पुष्टि कीजिए।

अथवा

रीतिकालीन कवियों में मतिराम के योगदान को रेखांकित कीजिए। 16

5. रीतिकालीन काव्य की पृष्ठभूमि स्पष्ट करते हुए रीतिकालीन की प्रमुख विशेषताएँ का विवेचन कीजिए।

अथवा

रीतिकाल की प्रमुख धाराओं का उल्लेख करते हुए किसी एक धारा की प्रमुख विशेषताओं का विवेचन कीजिए। 16

6. अलंकार का अभिप्राय बताते हुए साहित्य में अलंकार के महत्त्व पर प्रकाश डालिए।

अथवा

रस–सम्प्रदाय पर एक सारगर्भित लेख लिखिए। 12

http://www.rtuonline.com

http://www.rtuonline.com